माननीय सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, जी.सी.एस.के., के.सी.एम.क्यू, क्यू.सी
मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री

The Right Honourable, Sir Anerood Jugnauth, GCSK, KCMG, QC
Prime Minister of Mauritius

विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय निर्माण का आधिकारिक शुभारंभ

12 मार्च, 2015

भारत के प्रधान मंत्री, माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी, भारत के हाई कमिश्नर; श्री अनूप कुमार मुद्गल जी, भारत से आए हुए Delegation, Members of the Diplomatic Court, World Hindi Secretariat के members and Acting Secretary General, हिन्दी प्रेमी भाइयो, बहेनो और प्यारे बच्चो...

आप सभी को मेरा सादर नमस्कार।

छोटा भारत, भारत माता को प्रणाम करता है।

आज का दिन भारत और मॉरीशस की दोस्ती के लिए, हिन्दी भाषा के प्रेम के लिए और हिन्दी की दुनिया में मॉरीशस की भूमिका के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। आज इस घड़ी में आप सभी लोगों के साथ होना मेरे लिए बहुत ही गर्व की बात है।

यह घड़ी और भी खास है क्योंकि हमारे साथ भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जैसे महापुरुष, मॉरीशस के मित्र और हिन्दी प्रेमी मौजूद हैं।

मोदी जी... मॉरीशस की भूमि पर आपका विशेष स्वागत है।

भाइयो और बहनो,

मॉरीशस और भारत के संबंध हर दृष्टि से बहुत ख़ास हैं। इसलिए कि ये संबंध व्यापार का, राजनीति का और डिप्लोमेसी का तो है ही लेकिन उससे बढ़कर यह संबंध दिल का है।

हमारे पूर्वजों का इतिहास और उनसे मिली हुई सभ्यता और संस्कृति, हमारे दिलों को जोड़ता है।

हिन्दी भाषा इसी संस्कृति का बहुत ही अहम हिस्सा है। भारतीय भाषाएँ मॉरीशस की सांस्कृतिक पहचान के अटूट हिस्से है... इतिहास के हिस्से हैं। साथ ही ये हमारे भविष्य के लिए भी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

इन भाषाओं के महत्व को जानते हुए ही, मॉरीशस ने हमेशा से सभी भारतीय भाषाओं की रक्षा और प्रचार के लिए खूब मेहनत की है।

हमारे पूर्वजों ने जब मॉरीशस में अपने अधिकारों के लिए, अपने देश की आज़ादी के लिए लड़ाई की तब उस लड़ाई में अपनी भाषा की लड़ाई भी शामिल थी। जब देश के विकास के लिए काम किया तो अपनी भाषा के विकास के लिए भी काम किया। और इन भाषाओं ने देश के जागरण में, शिक्षा में, प्रगति में भरपूर योगदान दिया।

उन्हीं पूर्वजों ने सौ साल पहले कठिन हालात में बैठकाओं में हिन्दी की पढ़ाई शुरू करने के लिए संघर्ष किया। उसके बाद देश में हिन्दी का प्रचार करने वाली कई संस्थाएँ बनी। हिन्दी प्रेमियों ने अपनी भाषा के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया।

ये उनकी मेहनत, त्याग और तपस्या का ही फल है कि हिन्दी और भारतीय भाषाएँ बैठकाओं से निकलकर यूनिवर्सिटी तक पहुँच गई है।

इस पूरे संघर्ष में देश की सरकार ने भी हमेशा साथ दिया।

मॉरीशस दुनिया के उन बहुत कम देशों में हैं जहाँ न केवल सरकारी सकूलों में हिन्दी और भारतीय भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं बल्कि हमारे यहाँ जो भी संस्था स्कूलों से बाहर, मंदिरों में, सभाओं और बैठकाओं में हिन्दी पढ़ाती हैं उसको भी सरकार की ओर से पूरा सहयोग मिलता है।

अपनी भाषा से इतना प्रेम करने वाले मॉरीशस मे विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना से, मॉरीशस और पूरे डायास्पोरा के इतिहास मे हिन्दी के लिए काम करने वाले हर व्यक्ति और संस्था की मेहनत को एक नई दिशा मिली है।

हमें गर्व है कि इतने कम समय मे सचिवालय ने अपने काम से हिन्दी की दुनिया मे एक ख़ास जगह बना ली है।

मुझे पूरा विश्वास हैं की हेडक्वॉर्टर्स के बनने से सचिवालय को नई ऊँचाई तक पहुँचने की शक्ति मिलेगी और दोनों देशों के सहयोग से ये अपने उद्देश्य को पूरा कर पाएगा।

माननीय मोदी जी,

ये उद्देश्य, भारत और मॉरीशस के साथ-साथ दुनिया के हर हिन्दी-प्रेमी का हैं।

हिन्दी को विश्व भाषा के रूप में देखने का जो सपना भारत देख रहा है, उसे मॉरीशस की जनता ने भी अपनाया है।

यह सपना अपने साथ बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी लेकर आया है और साथ-साथ बहुत सारी मेहनत की माँग भी। मॉरीशस की सरकार और जनता उस ज़िम्मेदारी और उस मेहनत के लिए पूरी तरह तैयार है।

अपने पूर्वजों की हिन्दी को, दुनिया के एक बिलियन लोगों की हिन्दी को... हम युनाइटड नेशन में देखना चाहते हैं... मैडिसन स्क्वेर गार्डेन जैसे भाषण हम दुनिया के हर कोने से सुनना चाहते हैं।

आज आपकी उपस्थिति यह विश्वास दिलाती है कि दुनिया भर के हिन्दी प्रेमियों का यह सपना बहुत जल्दी पूरा होगा।

मॉरीशस की जनता और सरकार यह वचन देती है कि हिन्दी को उस ऊँचाई पर पहुँचाने के लिए जब भी आप आवाज़ उठाएँगे... हम आपके साथ होंगे।

जय हिंद!
जय मॉरीशस!